जो देखकर भी नहीं देखते

पाठ का सार / प्रतिपाद्य -

प्रस्तुत पाठ 'जो देखकर भी नहीं देखते' हेलन केलर द्वारा रचित लेख है। लेख के माध्यम से लेखिका उन लोगों पर हमारा ध्यान आकर्शित कराना चाहती हैं जो अपने आस-पास की चीजों पर ध्यान नहीं देते। वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसे लोग भी हैं जो आँखे न होते हुए भी अपने आस-पास की चीजों या घटनाओं को महसूस करके खुश होते हैं। अक्सर हमारे पास जो होता है हम उसका सही उपयोग नहीं करते। हेलन केलर न तो देख सकती थी न सुन सकती थी और न ही बोल सकती थी। फिर भी जीवन और प्रकृति के प्रति उनके उत्साह में कोई कमी नहीं आई। आँखे न होने के बाद भी वो अक्सर प्रकृति की सुन्दरता को महसूस करती थी। बहते हुए झरने को वो देख तो नहीं सकती लेकिन उसके पानी को अपनी अँगलियों से सपर्श कर उसके अनुभव का आनंद अवश्य लेती। पक्षियों को भले ही देख नहीं सकती लेकिन उनके मधुर ध्वनि को सुनकर उनका मन आनंदित हो उठता। लेखिका के पास देखने की शक्ति नहीं थी इसलिए वो उसका महत्व समझती थी। परंतु कुछ लोग जिनके पास दृष्टि है उनको दृष्टि के प्रति इतना उदासीन देखा गया हैं।

हेलन केलर की चारित्रिक विशेषताएँ -

(1) आशावादी - हेलन केलर के विचार आशावादी थे। देखने, सुनने और बोलने की शक्ति न होने के बाद भी वो जीवन और प्रकृति को महसूस कर उसका आनंद उठा लेती थी।

(2) संवेदनशील – लेखिका का मन अत्यंत संवेदनशील था। जो देख सकने वाले नहीं देखते या महसूस कर पाते उसको केवल महसूस कर लेखिका प्रसन्न हो उठती थी।

पाठ का उद्देश्य -

(1) पाठ के माध्यम से प्राकृतिक सौन्दर्य के महत्व को बताया गया है।
(2) आशावादी भावना का महत्व बताया गया है।
(3) जीवन के प्रति साकारात्मक सोच रखने को प्रेरित किया गया है।

पाठ का संदेश -

विषम परिस्थितियों में भी धौर्य बनाए रखते हुए जीवन का आनंद उठाने का संदेश दिया गया है। हमारे पास जो भी है उसके महत्व को समझना चाहिए। प्रायः ऐसा होता है कि हमारे पास जो होता है हम उसे कम महत्व देते हैं और जो नहीं होता है उसके लिए दुःखी होते हैं। परंतु पाठ की नायिका हमें हर हाल में खुश रहने का संदेश देती हैं।